महिलाएं करें शिव का प्रभावशाली उपाय

Gopal Raju

अधिकांशतः मेरे सामने ऐसे अनेक प्रसंग आते हैं जहॉ स्त्री वर्ग को शूद्र से भी अधिक तिरस्कृत मान कर मंत्र जप अथवा पूजा-अर्चना आदि सम्बन्धी विषयों में अछूत माना जाता है। उन्हें शिक्षा दी जाती है कि हनुमान जी की पूजा स्त्री वर्ग को नहीं करना चाहिए। शिवलिंग का स्पर्श उन्हें नहीं करना चाहिए आदि...आदि। सर्वप्रथम प्रयोग प्रारंभ करने से पूर्व स्पष्ट कर दूँ कि यह नियम-तथ्य शास्त्रोक्त नहीं हैं, स्वार्थवश हमारे ही द्वारा बनाए गए हैं।

"न शूद्र समाः स्त्रियः नहि शूद्र योनौ ब्राह्मण

क्षत्रिय वैश्या जायन्ते तस्माच्छान्दसा स्त्रियः संस्कार्यः।।"

-हारित

अर्थात् स्त्रियॉ शूद्र के समान हो ही नहीं सकतीं। शूद्र-योनि से सुवर्ण, ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य की उत्पत्ति कैसे संभव है? स्त्रियों को भी वेद द्वारा सुसंस्कृत करना चाहिए।

"यथैवात्मा तथा पुत्रः दुहिता समा।" - मनु 9/130

अर्थात् संतान तो आत्मा के समान है अर्थात् पुत्र तथा पुत्री दोनों समान हैं। आत्मा में कोई लिंग भेद नहीं होता।

"समानो मंत्रः समिति समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।

स्मानं मंन्त्रमाभिमन्त्रये वः समाने न वो हविषा सुहोमि।।"

-ऋग्वेद 10/190/3

अर्थात् हे समस्त नारी जाति। ये मंत्र तुम्हारे लिए भी समान रुप से दिए गए हैं और तुम्हारा परस्पर विचार भी समान रुप से ही हो। तुम्हारी सभाएँ सबके लिए समान रुप से खुली हों। तुम्हारा मन समान रुप से मिला हुआ हो, मंत्रों का उपदेश भी मैं तुम्हें समान रुप से देता हूँ और समान रुप से ग्रहण करने योग्य पदार्थ भी देता हूँ।

ऐसे एक-दो नहीं अनेकानेक शास्त्रोक्त प्रमाण उपलब्ध हैं जिनसे पुष्टि होती है कि पुरुषों की तरह स्त्रियों को भी पूजा, जप-तप-यज्ञ वेद पाठ आदि का समान रुप से अधिकार है। स्त्रियों ने कौन सा अपराध किया है? वह इन सब से क्यों वंचित रहें? परमात्मा की दृष्टि में सब समान हैं, पक्षपात का वहाँ लेशमात्र भी स्थान नहीं है, फिर स्त्री-पुरुष को लेकर वह अलग-अलग नियम क्यों बनाएगा, अस्तु।

वैसे तो श्रावण मास में धन-संपदा तथा वैभव के लिए कोई भी शिव का प्रयोग कर सकता है परन्तु यदि यह घर की कोई लड़की-महिला करती हैं तो बहुत ही लाभप्रद सिद्ध होता है। शिव यंत्र बनाने का सरलतम विधान निम्न है।

घर की कोई लड़की, महिला श्रावण मास में यथासुविधा भक्ति-साधना आदि का व्रत लें। शिवरात्रि को आसमानी अथवा हल्के नीले रंग की सुविधानुसार आयताकार ड्राइंगशीट लेकर चंदन तथा रोली से इस शीट पर सफाई से 108 कोष्टक बना लें। फिर **"ॐ नमः शिवाय"** मंत्र जपते हुए इन कोष्टकों में 108 मंत्र अंकित कर लें। आयत तथा मंत्र अंकित करने समय इस बात का ध्यान रखें कि लिखाई सदैव बाएं से दायीं ओर तथा नीचे से ऊपर की ओर अंकित हो। यह आपका धनदायक शिव यंत्र बन गया। एक बात का विशेष ध्यान रखें कि **"ॐ नमः शिवाय"** मंत्र का जप यंत्र निर्माण काल तक लगभग 200 मालाएँ अर्थात् 21,000 पूर्ण हो जानी चाहिए। सुविधा के लिए घड़ी का एलार्म प्रयोग कर सकते हैं ताकि ध्यान गिनती गिनने में ही न रमा रह

Gopal Raju

जाए। इस यंत्र को नीले रंग के फ्रेम में सुन्दरता से जड़वा लें और अपने पूजा स्थल, कार्यस्थल, ऑफिस, दुकान, फैक्ट्री आदि की उत्तर दिशा वाली दीवार पर लटका दें। यंत्र निर्मित घर की किसी संस्कारी स्त्री द्वारा ही होना है। प्रयोग घर का कोई भी सदस्य कर सकता है।

तदन्तर में निम्न मंत्र की एक, तीन, पॉच अथवा अधिक विषम संख्याओं में मालाऍ यंत्र पर ध्यान केन्द्रित कर जपते रहें। किसी विशेष कार्य पर कभी जाना हो तो यंत्र के अन्तिम अर्थात् एक सौ आठवें कोष्टक पर अपनी अनामिका ऊंगली रखे हुए दैनिक जप कर रहे मंत्र का जप करें। अपने मन में निरन्तर यह भावना बनाए रखें कि भोले भंडारी आपका कार्य सिद्ध कर वांछित इच्छा से भण्डार अवश्य भरेंगे। जप के बाद ऊंगली अपने आज्ञाचक्र पर लगाकर वहॉ ध्यान करें। जीवन में उत्तरोत्तर उन्नति, धन-वैभव, सुख-शान्ति के लिए यह अनुभूत प्रयोग है।

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च।

मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

Gopal Raju